

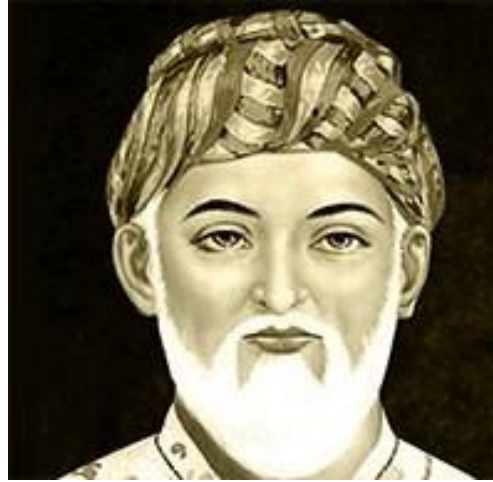


पीएम जी जवाहर नवोदय विद्यालय, कालास, सरोही, राज
स्थान

वषय - हिंद

पथ दशक - ओम काश सर

क व का परिचय



खानजादा 'मजा' खान अब्दुल रहीम (17 दिसंबर 1556 - 1 अक्टूबर 1627), -जन्ह केवल रहीम के नाम से जाना जाता है और खान-ए-खानन कहा जाता है, एक कव थे जो मुगल सम्राट अकबर के शासन के दौरान भारत में रहते थे, जो रहीम के गुरु थे वह अकबर के दरबार के नौ महत्वपूर्ण मंत्रियों में से एक थे, -जन्ह नवरत्न के नाम से जाना जाता था

भावाथ'

दोहा

र हमन धागा ेम का, मत तोड़ो
चटकायटूटे से फर ना \$मले, \$मले गाँठ
पार जाय

Aाख्या – रहीम जी कहते हB क ेम का बंधन कसी धागे के समान होता है, -जसे कभी भी झटके से नहD तोड़ना चा हए बEFक उसकH हफ़ाज़त करनी चा हए कहने का तात्पर्य यह है क ेम का बंधन ब³/₄त नाजुक होता है, उसे कभी भी बना कसी मज़बूत कारण के नहD तोड़ना चा हए कया क जब कोई धागा एक बार टूट जाता है तो फर उसे जोड़ा नहD जा सकता टूटे ³/₄ए धागे को जोड़ने कH को शश म. उस धागे म. गाँठ पड़ जाती है उसी कार कसी से !रशता जब एक बार टूट जाता है तो फर उस !रशते को दोबारा पहले कH तरह जोड़ा नहD जा सकता

शबदाथ'

चटकाय – झटके से
पार जाय – पड़ जाती है

दोहा

र हमन नज मन कऱ बथा, मन ही राखो गोय
सु न अ)ठलैहल लोग सब, बाँट न लैहै
कोय

Aाखया – रहीम जी कहते हB क अपने मन कऱ पीड़ा या दद' को 5सरा से छुपा कर ही रखना चा हए
कया क जब आपका दद' कसी अनय A Q को पता चलता है तो वे लोग उसका मज़ाक ही उड़ाते हB
कोई भी आपके दद' को बाँट नहD सकता अथा'त कोई भी A Q आपके दद' को कम नहD कर सकता

शब्दाथ'

नज – अपने
बथा – दद'
अ)ठलैहल – मज़ाक
उड़ाना बाँट – बाँटना
कोय – कोई

दोहा

एकै साथे सब सधै, सब साथे सब जाय
र हमन मूलहि सD चबो, फूलै फलै अघाय

Aाख्या – रहीम जी कहते हB क एक बार म. केवल एक काय' ही करना चा हए कया क एक काम के पूरा होने से कई और काम अपने आप पूरे हो जाते हB य)द एक ही साथ आप कई लऽय को ापत करने कH को शश कर.गे तो कुछ भी हाथ नहD आता कया क आप एक साथ ब३४त काया म. अपना शत- तशत नहD दे सकते रहीम कहते हB क यह वैसे ही है जैसे कसी पौधे म. फूल और फल तभी आते हB जब उस पौधे कH जड़ म. उसे तृपत कर देने -जतना पानी डाला जाता है अथा'त जब पौधे म. पया'पत पानी डाला जाएगा तभी पौधे म. फल और फूल आएँगे

शबदाथ'

मूलहि – जड़ म.
सD चबो – ःसचाई करना
अघाय – तृपत्

दोहा

चत्रकूट म. र\$म रहे, र हमन अवध-नरेस
जा पर बपदा पड़त है, सो आवत यह देस

Aाख्या – रहीम जी कहते हB क जब राम को बनवास \$मला था तो वे च ब्रूट म. रहने गये थे रहीम यह भी कहते हB क च ब्रूट ब3/4त घना व् अँधेरा वन होने के कारण रहने लायक जगह नहD थी परनतु रहीम कहते हB क ऐसी जगह पर वही रहने जाता है -जस पर कोई भारी वपXU आती है कहने का अXभ ाययह है क वपXU म. A Q कोई भी क)ठन-से-क)ठन काम कर लेता है

शबदाथ' –

अवध – रहने लायक न होना

बपदा – वपXU

दोहा

द रघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहि
ज्या रहीम नट कुंडली, समट कूद चढ़ जाहि

आख्या – रहीम जी का कहना है क उनके दोहा म. भले ही कम अर या शब्द ह, परंतु उनके अथ
बड़े ही गहरे और बत कुछ कह देने म. समथ' ह ठाक उसी कार जैसे कोई नट अपने करतब के
दौरान अपने बड़े शरीर को समटा कर कुंडली मार लेने के बाद छोटा लगने लगने लगता है कहने का
तात्पर्य यह है क कसी के आकार को देख कर उसका तभा का अंदाज़ा नह लगाया जा हए

शब्दाथ'

अरथ – अथ'

आखर- अर,
शब्दथोरे – थोड़े,
कम

दोहा

ध न रहीम जल पंक को लघु -जय पयत अघाय
उदध बड़ाई कौन है, जगत पआसो जाय

Aाख्या – रहीम जी कहते हB क कHचड़ म. पाया जाने वाला वह थोडा सा पानी ही धनय है कया क
उस पानी से न जाने कतने छोटे-छोटे जीवा कH पयास बुझती है ले कन वह सागर का जल ब34त
अधक मात्रा म. होते 34ए भी अथ' होता है कया क उस जल से कोई भी जीव अपनी पयास नहD बुझा
पता कहने का तात्पू य' यह है क बड़ा होने का कोई अथ' नहD रह जाता य)द आप कसी कH
सहायता न कर सकी

शब्दाथ' –

ध न –

धन्य

पंक – कHचड़

लघु – छोटा

उदध – सागर

पआसो – पयासा

दोहा

नाद री-झ तन देत मृग, नर धन देत समेत
ते रहीम पशु से अधक, रीझो कछू न देत

Aाखया – रहीम जी कहते हB क -जस कार हरण कसी के संगीत कM न से खुश होकर अपना ध्व

शरीर नयोछावर कर देता है अथा'त अपने शरीर को उसे सफ़ाप देता है इसी तरह से कुछ लोग 5सरे के ेम से खुश होकर अपना धन इत्मा)द सब कुछ उन्हें दे देते हB ले कन रहीम कहते हB क कुछ लोग पशु से भी बदतर होते हB जो 5सरा से तो ब3/4त कुछ ले लेते हB ले कन बदले म. कुछ भी नहD देते कहने काअXभ ाय यह है क य)द कोई आपको कुछ दे रहा है तो आपका भी फ़ज़' बनता है क आप उसे बदले म. कुछ न कुछ द.

शबदाथ' –

नाद – संगीत कM धव न
री-झ – मो हत हो कर, खुश हो कर

दोहा

बगरी बात बनै नहD, लाख करौ कन कोय
र हमन फाटे 5ध को, मथे न माखन होय

Aाखया – रहीम जी कहते हB क कोई बात जब एक बार बगड़ जाती है तो लाख को शश करने के बावजूद उसे ठाक नहD किया जा सकता यह वैसे ही है जैसे जब 5ध एक बार फट जाये तो फर उसको मथने से मकखन नहD नकलता कहने का तात्पर्य यह है क हम. कसी भी बात को करने से पहले सौ बार सोचना चा हए किया क एक बार कोई बात बगड़ जाए तो उसे सुलझाना ब3/4त मुE_कल हो जाता है

शब्दाथ'

बगरी – बगड़ी

फाटे 5ध – फटा 3/4आ 5ध

मथे – मथना

दोहा

र हमन देख बड़ेन को, लघु न द -जये डार
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवार

Aाखया – रहीम जी कहते हB क कसी बड़ी चीज को देखकर कसी छोट चीज कH उपेड़ा नहD करनी चा हए अथा'त बड़ी चीज़ के होने पर कसी छोट चीज़ को कम नहD समझना चा हए कया क जहाँ छोट चीज कH ज़रत होती है वहाँ पर बड़ी चीज बेकार हो जाती है जैसे जहाँ सुई कH ज़रत होती है वहाँ तलवार का कोई काम नहD होता कहने का अXभ ाय यह है क कसी भी चीज़ को कम

नहD समझना चा हए कया क हर एक चीज़ का अपनी-अपनी जगह महUव होता है

शब्दाथ'

बड़ेन – बड़ा

लघु – छोटा

आवे – आना

दोहा

र हमन नज संप त बन, कौ न बप त सहाय
बनु पानी जया जलज को, नहि र व सके बचाय

Aाखया – रहीम जी कहते हB क जब आपके पास धन नहD होता है तो कोई भी वपXU म. आपकH सहायता नहD करता यह वैसे ही है जैसे य)द तालाब सूख जाता है तो कमल को सूय' जैसा तापी भी नहD बचा पाता है कहने का तात्पर्य' यह है क आपका धन ही आपको आपकH मुसीबता से नकाल सकता है कया क मुसीबत म. कोई कसी का साथ नहD देता

शब्दाथ'

नज – अपना

बप त – वपXU

सहाय – सहायता

जलज – कमल

र व – सूय'

दोहा

र हमन पानी राखए, बनू पानी सब सून
पानी गए न ऊबैरै, मोती, मानुष, चून

आखया – इस दोहे म. रहीम ने पानी को तीन अथा म. योग किया है पानी का पहला अथा के के
मनुषय

लए लिया गया है जब इसका मतलब बनता से है रहीम कह रहे हB क मनुषय म. हमेशा बन (पानी)
होना चा हए पानी का 5सरा अथा आभा, तेज या चमक से है -जसके बना मोती का कोई मूल्य नहD
पानी का तीसरा अथा जल से है -जसे आटे (चून) से जोड़कर दशाया गया है रहीम का कहना है क
-जस तरह आटे का अEततव पानी के बना न5 नहD हो सकता और मोती का मूल्य उसका आभा के
बना नहD हो सकता है, उसी तरह मनुषय को भी अपने अवहार म. हमेशा पानी (बनता) रखना चा हए
-जसके बना उसका जीवन जीना अथा हो जाता है

शब्दाथा

बनु – बगैर, बनासून
– असंभव

d उउर

d 1 – ेम का धागा टूटने पर पहले कH भाँ त क्या नहD हो पाता?

उउर – -जस कार जब कोई धागा टूट जाता है और उस टूटे ¼ए धागे को जोड़ने के लिए उसम. गाँठ लगानी पड़ती है -जसके कारण वह पहले कH तरह नहD हो पाता, उसी तरह से जब कोई !रशता टूट जाता है और उस !रश्ते के टूटने के बाद !रश्ता को फर जोड़कर पहले कH तरह नहD बनाया जा सकता

d 2 – हम. अपना (ख 5सरा पर क्या नहD कट करना चा हए? अपने मन कH Aथा 5सरा से कहने पर उनका अवहार कैसा हो जाता है?

उउर – जब हम अपना (ख 5सरा को बताते हB तो 5सरे हमारा (ख बाँटने कH बजाय उसका मजाक ही उड़ाते हB इस लिए हम. अपना (ख 5सरा पर कट नहD करना चा हए अपने मन कH Aथा 5सरा से कहने पर उनका अवहार हमारे त अेा नहD रहता

d 3 – रहीम ने सागर कम अपेड़ा पंक जल को धनय क्या कहा है?

उउर – कमचड़ म. जल कम कम मन्ना होती है फर भी इस जल से कई जीवा कम पयास बुझती है ले कन सागर का जल बअत अधक मात्रा म. होने के बावजूद भी कसी कम पयास नहD बुझा पाता इस लए रहीम ने सागर कम अपेड़ा पंक जल को धनय कहा है क्या क धनय वही होता है जो सरा कम सहायता करता है

d 4 – एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?

उउर – -जस तरह से जड़ को सDचने से ही पेड़ म. फूल और फल लगते हB उसी तरह से एक को साधने से सब सध जाता है अथा'त एक काम के पूरा होने से अनय काया के लए रासता अपने आप खुल जाता है अतः हम. एक साथ बअत काया को न करके कसी एक काय' म. ही अपना पूरा ध्यान लगाना चा हए

d 5 – जलहीन कमल कम रड़ा सूय' भी क्या नहD कर पाता?

उउर – कमल के लए जल ही संपXU है क्या क जल के बना कमल को जअरी पोषण नहD मलेगा जल के बना कमल का जीवन असंभव है बना जल के कमल कम सूय' भी उसकम रड़ा नहD कर पाएगा, बEFक कमल सूय' कम गमg के कारण झुलस कर मर जाएगा

आतमप!रचय

नाम - गायत्री विलास डवर

कऽा-नौवD ए

रोल नंबर- 911

वषय- हनद

अधयाय - रहीम के दोहे

क व – रहीम

पथ दश'क-ओम काश सर

धन्यवाद